

सुपर्णचिंतौ द्वितीयः प्रस्तारः
आत्मा

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|------------|--------|--------|------------|------------|--------|--------|------------|------------|--------|--------|------------|------------|--------|--------|------------|
| जंघामात्री | अध्याय | अध्याय | जंघामात्री | जंघामात्री | अध्याय | अध्याय | जंघामात्री | जंघामात्री | अध्याय | अध्याय | जंघामात्री | जंघामात्री | अध्याय | अध्याय | जंघामात्री |
| अध्याय | | | | | | | | | | | | | | | अध्याय |
| अध्याय | | | | | | | | | | | | | | | अध्याय |
| जंघामात्री | | | | | | | | | | | | | | | जंघामात्री |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|--------------|------------|
| जंघामात्री | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | जंघामात्री |
| अध्याय | | | | | | | | | | | | | | | | | अध्याय |
| अध्याय | | | | | | | | | | | | | | | | | अध्याय |
| अध्याय | | | | | | | | | | | | | | | | | अध्याय |
| अध्याय | | | | | | | | | | | | | | | | | अध्याय |
| अध्याय | | | | | | | | | | | | | | | | | अध्याय |
| अध्याय | | | | | | | | | | | | | | | | | अध्याय |
| अध्याय | | | | | | | | | | | | | | | | | अध्याय |
| जंघामात्री | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | त्रिग्राहिणी | जंघामात्री |

उत्तरपक्षः

दक्षिणपक्षः

उत्तरपक्षे
जंघामात्री - २
अध्याय - ७
त्रिग्राहिण्यः - १०
अर्धपद्या - १
पादभागा - २१२
योगः ३१२

दक्षिणपक्षे
जंघामात्री - २
अध्याय - ७
त्रिग्राहिण्यः - १०
अर्धपद्या - १
पादभागा - २१२
योगः ३१२

पुच्छे
जंघामात्री - २
अध्याय - ७
त्रिग्राहिण्यः - १०
पादभागा - २६५
अर्धपादभागे - २
योगः २८६

| | | | | | | | | | | | | | | | |
|------------|--------|--------|------------|------------|--------|--------|------------|------------|--------|--------|------------|------------|--------|--------|------------|
| जंघामात्री | अध्याय | अध्याय | जंघामात्री | जंघामात्री | अध्याय | अध्याय | जंघामात्री | जंघामात्री | अध्याय | अध्याय | जंघामात्री | जंघामात्री | अध्याय | अध्याय | जंघामात्री |
| अध्याय | | | | | | | | | | | | | | | अध्याय |
| अध्याय | | | | | | | | | | | | | | | अध्याय |
| जंघामात्री | | | | | | | | | | | | | | | जंघामात्री |

पुच्छम्

आत्मनि यजुष्मत्यः - ४१
पद्या - १४
अर्धपद्या - ८
जंघामात्री - २
अध्याय - १७
योगः ४१

आत्मनि लोकम्पुणाः १०४०
जंघामात्री - १६
अध्याय - २४
त्रिग्राहिण्यः - ४
पद्या - २४
अर्धपद्या - १२
पादभागा - १५६
अर्धपादभागा - ४
योगः १०४० + ४१ = १०८१

मन्त्रमूलक यजुष्मती इष्टकाएँ
आश्विनी - ५
ऋतव्या - २
वैश्वदेवी - ५
अपस्या - ५
प्राणभृता - ५
वयस्या - १९
योग - ४१

मानमूलक (यजुष्मती)
पद्या - १४
अर्धपद्या - ८
जंघामात्री - २
अध्याय - १७
योग - ४१

मानमूलक (लोकम्पुणा)
पद्या - २४
अर्धपद्या - १४
पादभागा - १८०५
त्रिग्राहिणी - ३४
अर्धभागा - ६
अध्याय - ४५
योग - १९५०

पहायोग - १९९१

द्वितीयप्रस्तारे प्रयुक्ता इष्टकाः -
उत्तरपक्षे - ३१२
दक्षिणपक्षे - ३१२
पुच्छे - २८६
आत्मनि - १०८१ = १९९१ इष्टकाः